Topic- सेवारत अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम
Concept of the In Service Teacher Education

वुड डिस्पैच (Wood dispatch, 1854) ने शिक्षकों में उनके व्यवसाय मे सुधार एवं विकास की घोषणा की

भारतीय शिक्षा आयोग (1882) ने इन प्रस्तावों को पारित

(1) शिक्षण सिद्धान्तों एवं अभ्यास की परीक्षा के लिए व्यवस्था की गयी। इस परीक्षा में सफल होने पर ही माध्यमिक शिक्षा में स्थायी अध्यापक की नियुक्ति की गयी।

2) स्नातक स्तर के छात्रों के इस परीक्षा मे सम्मिलित होने के लिए थोडे समय के लिए प्रशिक्षण के लिए आना आवश्यक होता है।

- सर्वप्रथम सेवारत अध्यापक शिक्षा के प्रत्यय और प्रशिक्षण संस्थाओं की भूमिका का प्रसंग लार्ड कर्जन (1904) की शिक्षा नीति मे मिलता है।
- वर्ष 1929 मे हर्टाग समिति ने अपने प्रस्ताव मे स्पष्ट रूप से सेवारत अध्यापक शिक्षा की आवश्यकता पर बल दिया
- माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952) ने निम्नलिखित क्रियाओं की सिफारिश की जो कि प्रशिक्षण संस्थाओं मे दी जानी चाहिये –
  1. पुनश्चर्या पाठ्यक्रम (Refresher Course)
  2. अल्प तीव्र पाठ्यक्रम विशिष्ट विषयों मे
  3. कार्यशाला मे व्यावहारिक प्रशिक्षण तथा
  4. गोष्ठी एवं व्यावहारिक वाद- विवाद

सेवारत अध्यापक शिक्षा की मूलभूत धारणायें
Basic Assumptions of In-Service Education teacher

सेवारत अध्यापक शिक्षा का नियोजन कुछ निश्चित अवधारणाओ पर आधारित है।

1) सेवारत अध्यापको की शिक्षा उनके पूरे व्यावसायिक जीवन मे एक नियोजित ढंग से की जाय

2) सेवा रत अध्यापक शिक्षा के द्वारा शिक्षा के विभिन्न पहलुओं मे गुणात्मक विकास किया जा सकता है